अक्टूबर क्रांति
और
कम्युनिस्ट इंटरनेशनल का गठन सिंहावलोकन

अरुण कुमार सिन्हा

अनुवादक : पूजा सिंह

अक्टूबर क्रांति और कम्युनिस्ट इंटरनेशनल का गठन सिंहावलोकन
अरुण कुमार सिन्हा

अक्टूबर क्रांति और कम्युनिस्ट इंटरनेशनल का गठन : सिंहावलोकन

अरुण कुमार सिन्हा

अनुवादक : पूजा सिंह

The Marginalised Publication

अनुक्रम

1.	भूमिका	7
2.	रूस और जर्मनी की मजदूर क्रांति का अंतरराष्ट्रीय महत्व	12
3.	सर्वहारा की तानाशाही और बोल्शेविकवाद का कायापलट	20
4.	क्रान्तिकारी रूस में उत्पादन संबंध और मजदूर वर्ग की तानाशाही	33
	4.1 सोवियत रूस में राज्य पूंजीवाद की बोल्शेविक व्याख्या	
	4.2 सोवियत रूस में घरेलू उत्पादन संबंधों पर राज्य पूंजीवाद का शासन	
	4.3 सोवियत रूस के उत्पादन संबंधों पर श्रमिकों का नियंत्रण	
	4.4 सोवियत रूस में कृषि उत्पादन संबंधों की बोल्शेविक व्याख्या	
	4.4.1 बोल्शेविक कृषि-नीति की समकालीन आलोचना	
5.	'औपनिवेशिक थीसिस' और उपनिवेशों में कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की भूमिका	65
6.	निष्कर्ष	78
7.	नोट्स	89

भूमिका

वर्ष 2017 रूस के सेंट पीटर्सबर्ग (पेट्रोग्राड शहर का पुराना और मौजूदा नाम) में अक्टूबर क्रांति के स्मरण का वर्ष (शताब्दी) भी है। दुनिया भर में आधुनिक कामगार वर्ग के लिए अक्टूबर क्रांति पूंजीवाद के खिलाफ उनके संघर्ष में मील का पत्थर है। वहीं पूंजीवाद सभ्यता के नाम पर एक किस्म की बर्बरता है। फ्रांस में मार्च 1871 की पेरिस कम्यून अपनी तरह की पहली स्वतंत्र और अहम कम्यून थी, जिसमें पूंजीवाद में निहित बर्बरता के खिलाफ कामगार वर्ग की ताकत सामने आयी। हालांकि अक्टूबर क्रांति का 'सोवियतों को पूरी सत्ता' का नारा आज भी आधुनिक श्रमिकों के दिलोदिमाग में गूंजता रहता है। वे जब भी और जहां भी अपनी स्वतंत्र वर्गीय पहचान प्रकट कर पाते हैं, पूंजी और पूंजीवाद के खिलाफ अपने आप को अभिव्यक्त करते हैं। ऐसे में स्वाभाविक है कि वर्ष 2017 में कामगार वर्ग इस विषय पर चर्चा करेगा, आत्मावलोकन करेगा, अपनी उपलब्धियों की चर्चा करेगा और अक्टूबर क्रांति के बाद की एक सदी में अपनी विफलताओं पर भी चर्चा करेगा।

आधुनिक इतिहासकारों ने हमें यह यकीन दिलाया है कि रूस की अक्टूबर क्रांति बीती सदी में कामगार वर्ग की इकलौती महत्त्वपूर्ण क्रांति थी। इतिहास के इस गलत चित्रण के लिए उनके पास अपनी वजहें हैं। रूसी क्रांति के सौ साल बाद हमें इतिहास की ऐसी गलत व्याख्या को दुरुस्त करना चाहिए। रूसी क्रांति के सबसे बड़े नेता व्लादीमीर लेनिन ने सन 1918 में लिखा था, 'इतिहास ने ऐसा अनूठा मोड़ लिया है कि उसने 1918 में समाजवाद के दो असंबद्ध हिस्सों को जन्म दिया, जो एक दूसरे के समांतर साथ रहे, मानो अंतरराष्ट्रीय साम्राज्यवाद की एक खोल में दो भ्रूण एक साथ।' (लेनिन 1974बी, पृष्ठ 339)।

समाजवाद के दोनों 'असंबद्ध गोलार्ध' के रूप में लेनिन ने जर्मनी और रूस की क्रांति की बात की है, जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय कामगार वर्ग में समाजवाद को एक

तात्कालिक व्यावहारिक एजेंडे के रूप में पेश किया। इन दोनों ही क्रांतियों में कामगार वर्ग के सामने व्यावहारिक एजेंडा था समाज को गुणात्मक रूप से नयी सतह पर ले जाना, जहां पूंजीवाद के खात्मे के लिए अंतिम संघर्ष छेड़ा जा सके और मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का खात्मा किया जा सके।

रूस में कामगार वर्ग के सत्तासीन होने के महत्व को कार्ल लीबनेख्त ने बेहतर तरीके से समझा। वे जर्मनी में जनवरी 1919 में कामगारों के बलिन विद्रोह के प्रमुख नेता थे। लीबनेख्त ने प्रथम विश्वयुद्ध के मित्र राष्ट्रों के कामगारों को एक जोशीला खत लिखा–

"दुनिया भर के कामगारों को समाजवादी क्रांति की आग को बुझने नहीं देना चाहिए वरना इससे जुड़ी तमाम उम्मीदें और इसकी ताकत खो जाएगी। रूसी समाजवादी रिपब्लिक की विफलता दुनिया भर के कामगार वर्ग की विफलता होगी।" (लीबनेख्त, 1919)

हाल ही में आया शोध एक तथ्यात्मक जानकारी देता है कि कामगारों का पूरा खेमा जर्मनी में कामगारों और सैनिकों की क्रांति के प्रति विशेष आशान्वित था, जो नवंबर 1918 से जनवरी 1919 तक चली। इसमें अधिकांश उम्मीद रूस से थी।

"दोनों, नेताओं तथा साधारण मजदूर के लिए, क्रांतिकारी जर्मनी 'वैश्विक क्रांतिकारी मानचित्र' का केंद्र था।(7) सोवियत रूस में 1918-19 की जर्मन क्रांति को लेकर मीडिया में जबरदस्त कवरेज मिली। साथ ही उनके प्रति एकता का आह्वान भी किया गया, एकता के प्रदर्शन भी हुए। जनवरी 1919 में जब बर्लिन में कार्ल लीबनेख्त और रोजा लक्जमबर्ग की हत्या कर दी गयी तो उन्हें पूरे सोवियत रूस में समाजवाद के शहीद के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। यहां तक कि अत्यंत दूरदराज इलाकों में भी उनकी शहादत का शोक मनाया गया। (अल्बर्ट, 2011, पृ. 111-112)"

इसके बावजूद कटु सत्य यही था कि यह क्रांति अंतरराष्ट्रीय कामगार वर्ग की आकांक्षाओं की कसौटी पर विफल रही। सन 1919 में जर्मनी में जनवरी क्रांति की विफलता के बाद तत्कालीन शासक वर्ग, जो जर्मन-सामाजिक-जनतंत्र के अधीन था, ने बहुत बेरहमी से श्रमिकों और सैनिकों के असंतोष को दबाया। यह शासक वर्ग पूंजीवाद का समर्थक और उसके प्रति पूरी निष्ठा रखने वाला था। वहीं दूसरी ओर रूस में अक्टूबर क्रांति की पराजय की प्रकृति कहीं अधिक अवास्तविक थी। यह सब काफी लम्बे दौर में और ऐसे वक्त में हुआ जब हर कोई सोवियत रूस को